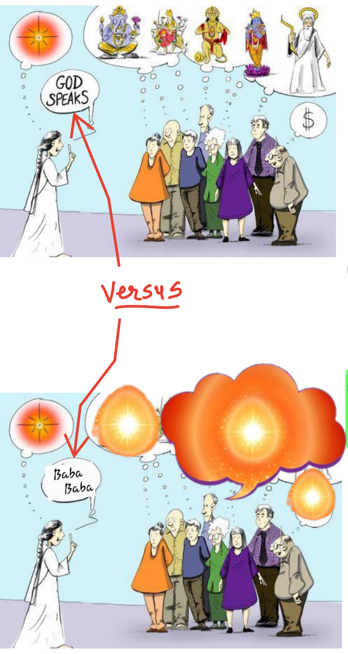

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम जब किसी को भी समझाते हो या भाषण करते हो तो "बाबा-बाबा कहकर समझाओ", बाप की महिमा करो तब तीर लगेगा"

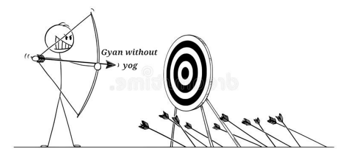

प्रश्नः-बाबा भारतवासी बच्चों से विशेष कौन से प्रश्नपूछते हैं?

उत्तर:- तुम भारतवासी बच्चे "जो इतने साहूकार थे, सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण देवता धर्म के थे, तुम पवित्र थे, काम कटारी नहीं चलाते थे, बहुत धनवान थे"। फिर तुमने इतना देवाला कैसे निकाला है - कारण का पता है? बच्चे, तुम गुलाम कैसे बन गये? इतना सब धन दौलत कहाँ गँवा दिया? ख्याल करो तुम पावन से पतित कैसे बन गये? तुम बच्चे भी ऐसी-ऐसी बातें बाबा-बाबा कह दूसरों को भी समझाओ - तो सहज समझ जायेंगे।

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति कहने से भी बाप जरूर याद आना चाहिए। बाप का पहला-पहला कहना

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है मनमनाभव। जरूर आगे भी कहा है तब तो अभी भी कहते हैं ना। तुम बच्चे बाप को जानते हो, जब कहाँ सभा में भाषण करने जाते हो, वो लोग तो बाप को जानते नहीं। तो उनको भी ऐसा कहना चाहिए कि शिवबाबा कहते हैं, वही पतित-पावन है। जरूर पावन बनाने के लिए यहाँ आकर समझाते हैं। जैसे बाबा यहाँ तुमको कहते हैं - हे बच्चों, तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया था, तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले विश्व के मालिक थे, वैसे तुमको भी बोलना चाहिए कि बाबा यह कहते हैं। ऐसे कोई के भाषण का समाचार आया नहीं है। शिवबाबा कहते हैं मुझे ऊंच ते ऊंच मानते हो, पतित-पावन भी मानते हो, मैं आता भी हूँ भारत में और राजयोग सिखलाने आता हूँ, कहता हूँ मामेकम् याद करो, मुझ ऊंच बाप को याद करो क्योंकि वह बाप देने वाला दाता है। बरोबर भारत में तुम विश्व के मालिक थे ना। दूसरा कोई धर्म नहीं था। बाप हम बच्चों को समझाते हैं हम फिर आपको समझाते हैं। बाबा कहते हैं तुम भारतवासी कितने साहूकार थे।

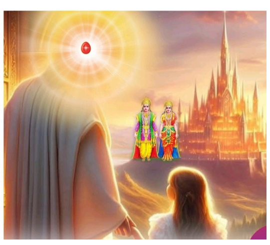

मामेकम्/ Only Me

याद करो...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

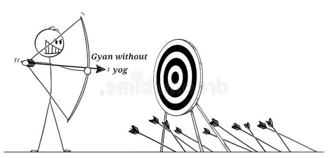

सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण देवता धर्म था, तुम पवित्र थे, काम कटारी नहीं चलाते थे। बहुत धनवान थे। फिर बाप कहते हैं तुमने इतना देवाला कैसे निकाला है - कारण का पता है? तुम विश्व के मालिक थे। अभी तुम विश्व के गुलाम क्यों बने हो? सभी से कर्जा लेते रहते हो। इतने सब पैसे कहाँ गये? जैसे बाबा भाषण कर रहे हैं वैसे तुम भी भाषण करो तो बहुतों को आकर्षण हो। तुम लोग बाबा को याद नहीं करते हो तो किसको तीर लगता नहीं। वह ताकत नहीं मिलती। नहीं तो तुम्हारा एक ही भाषण ऐसा सुनें तो कमाल हो जाए। शिवबाबा समझाते हैं भगवान तो एक ही है। जो दु:ख हर्ता सुख कर्ता है, नई दुनिया स्थापन करने वाला है। इसी भारत पर स्वर्ग था। हीरे-जवाहरातों के महल थे, एक ही राज्य था। सब क्षीरखण्ड थे। जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत की महिमा सुनकर खुश होंगे। बाप बच्चों से पूछते हैं - इतना धन दौलत कहाँ गँवा दिया? भक्ति मार्ग में तुम कितना खर्चा करते आये हो। कितने मन्दिर

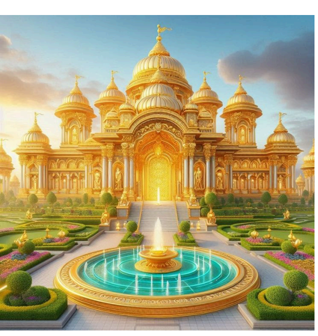

बनाते हो। बाबा कहते हैं ख्याल करो - तुम पावन से पतित कैसे बने हो? कहते भी हो ना - बाबा दु:ख में आपका सिमरण करते हैं, सुख में नहीं करते। परन्तु दु:खी तुमको बनाता कौन है? घड़ी-घड़ी बाबा का नाम लेते रहो। तुम बाबा का सन्देश देते हो। बाबा कहते हैं - हमने तो स्वर्ग, शिवालय स्थापन किया, स्वर्ग में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था ना। तुम यह भी भूल गये हो। तुमको यह भी पता नहीं है कि राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। श्रीकृष्ण जो विश्व का मालिक था, उनको कलंक बैठ लगाते हो, मेरे को भी कलंक लगाते हो। मैं तुम्हारा सद्गति दाता, तुम मुझे कुत्ते बिल्ली, कण-कण में कह देते हो। बाबा कहते हैं तुम कितने पतित बन गये हो। बाप कहते हैं सर्व का सद्गति दाता, पतित-पावन मैं हूँ। तुम फिर पतित-पावनी गंगा कह देते हो। मेरे से योग न लगाने से तुम और ही पतित बन पड़ते हो। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। घड़ी-घड़ी बाबा का नाम लेकर समझाओ तो शिवबाबा याद रहेगा। बोलो, हम बाप की महिमा करते हैं, बाप

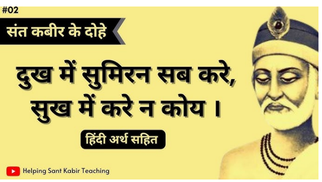

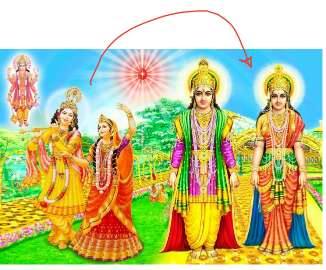

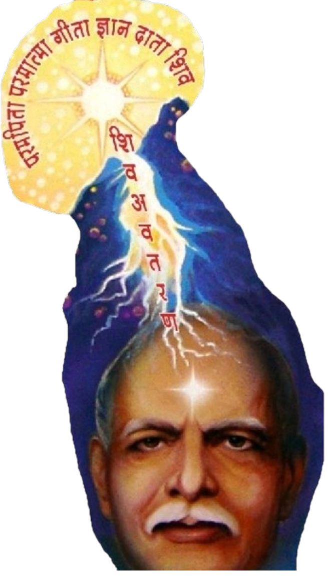

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

खुद कहते हैं मैं कैसे साधारण पतित तन में बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। इनके ही बहुत जन्म हैं। यह अब मेरा बना है तो इस रथ द्वारा तुमको समझाता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। भागीरथ यह है, इनके भी वानप्रस्थ अवस्था में मैं आता हूँ। शिवबाबा ऐसा समझाते हैं। ऐसा भाषण किसका सुना नहीं है। बाबा का तो नाम ही नहीं लेते हैं। सारा दिन बाबा को तो बिल्कुल याद ही नहीं करते हैं। झरमुई झगमुई में लगे रहते हैं और लिखते हैं कि हमने ऐसा भाषण किया, हमने यह समझाया। बाबा समझते हैं कि अभी तो तुम चींटिंया हो। मकोड़े भी नहीं बने हो और अहंकार कितना रहता है। समझते नहीं हैं कि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कहते हैं। शिवबाबा को तुम भूल जाते हो। ब्रह्मा पर झट बिगड़ते हैं। बाप कहते हैं - तुम मुझे ही याद करो, तुम्हारा काम है मेरे से। मुझे याद करते हो ना। परन्तु तुमको भी पता नहीं है कि बाप क्या चीज़ है, कब आते हैं। गुरू लोग तुमको कहते हैं कि कल्प लाखों वर्ष का है और बाप कहते हैं कि कल्प है ही 5 हज़ार वर्ष का। पुरानी दुनिया सो

God's complaint

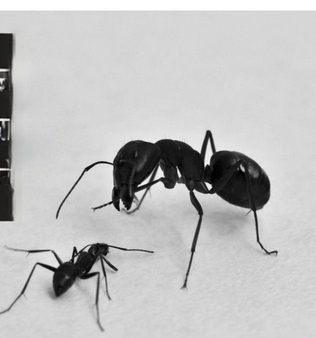

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

फिर नई होगी। नई सो फिर पुरानी होती है। अब नई देहली है कहाँ? देहली तो जब परिस्तान होगी तब नई देहली कहेंगे। नई दुनिया में नई देहली थी, जमुना घाट पर। उन पर लक्ष्मी-नारायण के महल थे। परिस्तान था। अभी तो कब्रिस्तान होना है, सब दफन हो जाने हैं इसलिए बाप कहते हैं - मुझ ऊंच ते ऊंच बाप को याद करो तो पावन बनेंगे। हमेशा ऐसे बाबा-बाबा कहकर समझाओ। बाबा नाम नहीं लेते हो इसलिए तुम्हारा कोई सुनते नहीं हैं। बाबा की याद न होने से तुम्हारे में जौहर नहीं भरता। देह-अभिमान में तुम आ जाते हो। बांधेलियां जो मार खाती हैं वह तुमसे जास्ती याद में रहती हैं, कितना पुकारती हैं। बाप कहते हैं तुम सब द्रोपदियां हो ना। अब तुमको नंगन होने से बचाते हैं। मातायें भी ऐसी कोई होती हैं जिनको कल्प पहले भी पूतना आदि नाम दिये थे। तुम भूल गये हो।

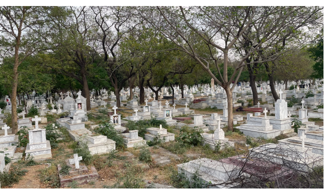

समझा?

Attention Please..!

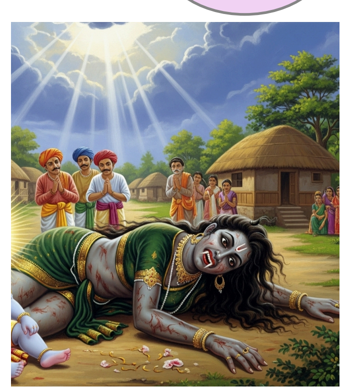

बाप कहते हैं भारत जब शिवालय था तो उसे स्वर्ग

कहा जाता था। यहाँ फिर जिनके पास मकान, विमान आदि हैं वह समझते हैं हम स्वर्ग में हैं। कितने मूढ़मती हैं। हर बात में बोलो बाबा कहते हैं। यह हठयोगी तुमको मुक्ति थोड़ेही दे सकते हैं। जबकि सर्व का सद्गति दाता एक है फिर गुरू किसलिए करते हो? क्या तुमको संन्यासी बनना है या हठयोग सीखकर ब्रह्म में लीन होना है? लीन तो कोई हो नहीं सकता। पार्ट सबको बजाना है। सब एक्टर्स अविनाशी हैं। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है, मोक्ष किसको मिल कैसे सकता है। बाप कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। फिर पतित-पावनी गंगा कैसे हो सकती। पतित-पावन तुम मुझे कहते हो ना। तुम्हारा मेरे से योग टूटने से यह हाल हुआ है। अब फिर मेरे से योग लगाओ तो विकर्म विनाश होंगे। मुक्तिधाम में पवित्र आत्मायें रहती हैं। अभी तो सारी दुनिया पतित है। पावन दुनिया का तुमको मालूम ही नहीं है। तुम सब पुजारी हो, पूज्य एक भी नहीं। तुम बाबा का नाम लेकर सबको सुजाग कर सकते हो। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं - उनकी तुम

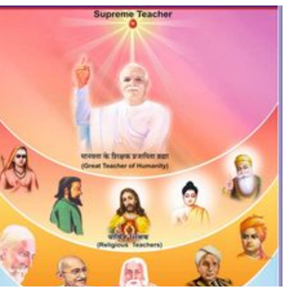

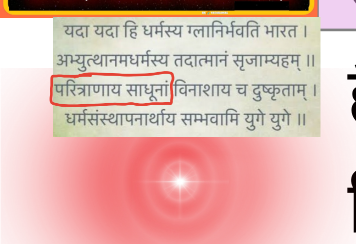

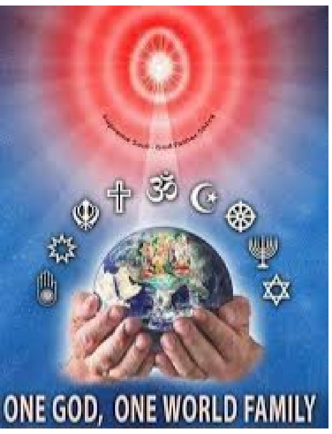

ग्लानि बैठ करते हो। श्रीकृष्ण छोटा बच्चा, सर्वगुण सम्पन्न वह ऐसा धंधा कैसे बैठ करेगा। और श्रीकृष्ण सबका फादर हो कैसे सकता। भगवान तो एक होता है ना। जब तक मेरी श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो कट (जंक) कैसे उतरेगी। तुम सबकी पूजा करते रहते हो तो क्या हालत हो गई, इसलिये फिर मुझे आना पड़ता है। तुम कितने धर्म कर्म भ्रष्ट हो गये हो। बताओ हिन्दू धर्म किसने कब स्थापन किया? ऐसे अच्छी ललकार से भाषण करो। तुमको घड़ी-घड़ी बाप याद ही नहीं आता है। कभी-कभी कोई लिखते हैं कि हमारे में तो जैसे बाबा ने आकर भाषण किया। बाबा बहुत मदद करते रहते हैं। तुम याद की यात्रा में नहीं रहते हो इसलिए चींटी मार्ग की सर्विस करते हो। बाबा का नाम लेंगे तब ही किसको तीर लगेगा। बाबा समझाते हैं बच्चे तुमने ही आलराउन्ड 84 का चक्र लगाया है तो तुमको ही आकर समझाना पड़े। मैं भारत में ही आता हूँ। जो पूज्य थे वह पुजारी बनते हैं। मैं तो पूज्य पुजारी नहीं बनता हूँ।

Complaint from God

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

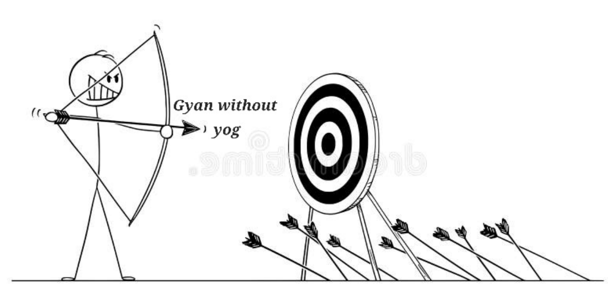

Points: ज्ञान योग धारण

“बाबा कहते हैं, बाबा कहते हैं", यह तो धुन लगा देनी चाहिए। तुम जब ऐसे-ऐसे भाषण करो, जब ऐसा हम सुनें तब समझें कि अब तुम चींटी से मकोड़े बने हो। बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाता हूँ, तुम सिर्फ मामेकम् याद करो। इस रथ द्वारा तुमको सिर्फ कहता हूँ कि मुझे याद करो। रथ को थोड़ेही याद करना है। बाबा ऐसे कहते हैं, बाबा यह समझाते हैं, ऐसे-ऐसे तुम बोलो फिर देखो तुम्हारा कितना प्रभाव निकलता है। बाप कहते हैं देह सहित सभी सम्बन्धों से बुद्धि का योग तोड़ो। अपनी देह भी छोड़ी तो बाकी रही आत्मा। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कई कहते हैं “अहम् ब्रह्मस्मि" माया के हम मालिक हैं। बाप कहते हैं तुम यह भी नहीं जानते कि माया किसको कहा जाता और सम्पत्ति किसको कहा जाता है! तुम धन को माया कह देते हो। ऐसे-ऐसे तुम समझा सकते हो। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। बाप को याद नहीं करते तो तीर नहीं लगता क्योंकि याद का बल नहीं

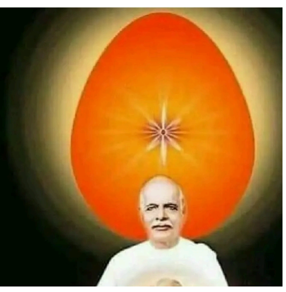

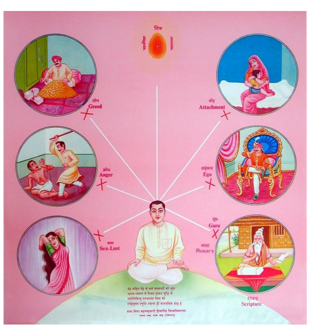

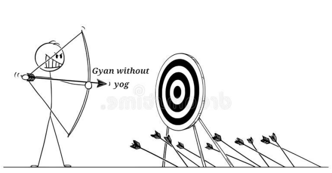

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये पक्का समझ लो.. One & Only way

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

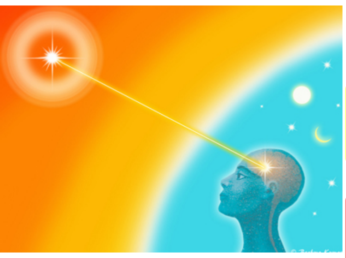

मिलता है। बल मिलता है याद से। जिस योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। बच्चे हर बात में बाबा का नाम लेते रहो तो कभी कोई कुछ कह न सके। सर्व का भगवान बाप तो एक है या सभी भगवान हैं? कहते हैं हम फलाने संन्यासी के फालोअर्स हैं। अब वह संन्यासी और तुम गृहस्थी तो तुम फालोअर्स कैसे ठहरे? गाते भी हैं झूठीमाया, झूठीकाया, झूठा सब संसार। सच्चा तो एक ही बाप है। वह जब तक न आये तो हम सच्चे नहीं बन सकते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता एक ही है। बाकी कोई भी मुक्ति थोड़ेही देते हैं जो हम उनके बनें। बाबा कहते हैं यह भी ड्रामा में था। अब सावधान हो आंखें खोलो। बाबा ऐसे कहते हैं, यह कहने से तुम छूट जायेंगे। तुम्हारे ऊपर कोई बकवाद नहीं करेंगे। त्रिमूर्ति शिवबाबा कहना है, सिर्फ शिव नहीं। त्रिमूर्ति को किसने रचा? ब्रह्मा द्वारा स्थापना कौन कराते हैं? क्या ब्रह्मा क्रियेटर हैं? ऐसे-ऐसे नशे से बोलो तब काम कर सकते हो। नहीं तो देह-अभिमान में बैठ भाषण करते हैं।

ये पक्का समझ लो..

समझा?

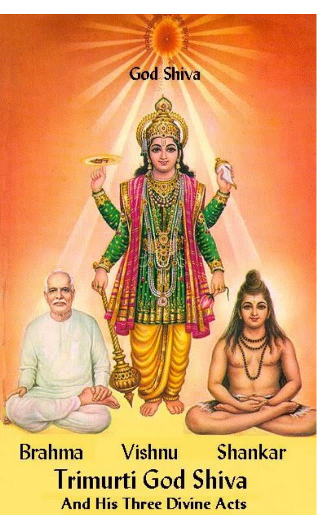

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

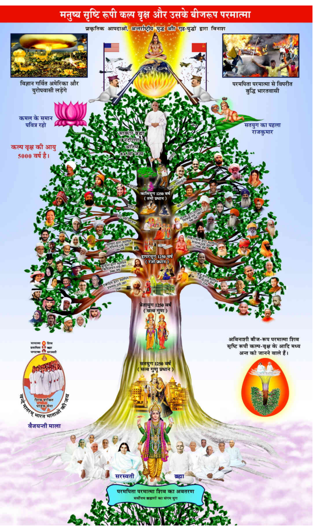

बाप समझाते हैं यह अनेक धर्मों का कल्प वृक्ष है। पहले-पहले है देवी-देवता धर्म। अब वह देवता धर्म कहाँ गया? लाखों वर्ष कह देते हैं यह तो 5 हज़ार वर्ष की बात है। तुम मन्दिर भी उन्हों के बनाते रहते हो। दिखाते हैं पाण्डवों और कौरवों की लड़ाई लगी। पाण्डव पहाड़ों पर गल मरे फिर क्या हुआ? मैं कैसे हिंसा करूँगा। मैं तो तुमको अहिंसक वैष्णव बनाता हूँ। काम कटारी न चलाना, उसको ही वैष्णव कहते हैं। वह हैं विष्णु की वंशावली। अच्छा!

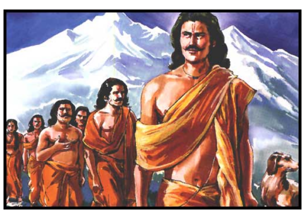

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शा

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सर्विस में सफलता प्राप्त करने के लिए अहंकार को छोड़ हर बात में बाबा का नाम लेना है। याद में रहकर सेवा करनी है। झरमुई-झगमुई में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है।

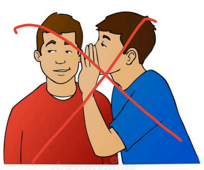

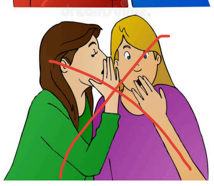

2) सच्चा-सच्चा वैष्णव बनना है। कोई भी हिंसा नहीं करनी है। देह सहित सभी सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ देना है।

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- हाँ जी के पाठ द्वारा सेवाओं में महान बनने वाले सर्व की दुआओं के पात्र भव

Finale Achievement

कोई भी सेवा खुशी और उमंग से करते हुए सदा ध्यान रहे कि जो सेवा हो उसमें सर्व की दुआयें प्राप्त हों क्योंकि जहाँ दुआयें होंगी वहाँ मेहनत नहीं होगी।

अभी यही लक्ष्य हो कि जिसके भी सम्पर्क में आयें उसकी दुआयें लेते जाएं।

हाँ जी का पाठ ही दुआयें लेने का साधन है।

कोई रांग भी है तो उसे रांग कहकर धक्का देने के बजाए सहारा देकर खड़ा करो। सहयोगी बनो। तो उससे भी सन्तुष्टता की दुआयें मिलेंगी।

जो दुआयें लेने में महान बनते हैं वे स्वत:महान बन जाते हैं।

ये पक्का समझ लो..

स्लोगन:- हार्ड वर्कर के साथ-साथ अपनी स्थिति भी हार्ड (मजबूत) बनाने का लक्ष्य रखो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

22-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति

मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

योग का प्रयोग अर्थात् अपने शुद्ध संकल्पों का प्रयोग तन पर, मन पर, संस्कारों पर अनुभव करते आगे बढ़ते जाओ, इसमें एक दो को नहीं देखो।

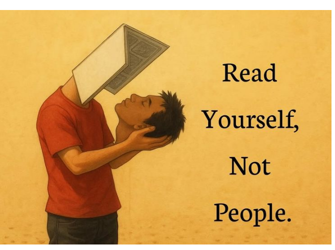

यह क्या करते, यह नहीं करते, पुराने करते वा नहीं करते, यह नहीं देखो।

पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊं क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है।

जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे तब एक एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा।

Secret Revealed

m.Imp. *****

(26) बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चूक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और मृत्यु - इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु, न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब किताब चूक्तू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चींटियाँ, चीटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ चीटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकट्ठे ही विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चीटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चीटियों में अंतर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाब-किताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है।

Example

वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चूक्तू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक हैं आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बिमारियाँ । अपने आप ही आत्मा तन

Point to be Noted

(1)

(2)

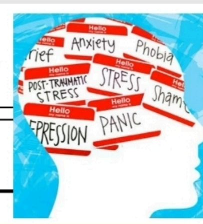

(3)

के रोग द्वारा हिसाब चूक्तू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे-ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना, कि कैसे है। और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चूक्तू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में सम्बन्ध (Type-2) और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक (Type-3) आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू नहीं होगा। वह यहाँ साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही है। इसलिए यह हिसाब-किताब चूक्तू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है। समझा। यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा

By hook or by crook
चाहे प्यार से..
चाहे मार से..

गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चूक्तू हुए है वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता भी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते है, जितना सोचते है उतना नहीं कर पाते है और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्यों हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते है, कहते है ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती है तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चूक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर

most imp to understand

Attention..!

धर्मराज

सेफ्टी का साधन है ही 'एक बाप की छत्रछाया'। छत्रछाया तो है ही ना!

21/10/25 **(10.12.1984)**

7.10 त्रिकालदर्शी बनो :

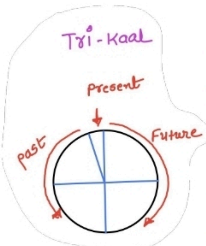

सदा अमृतवेले से लेकर रात तक के कार्य चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, सब कार्य सहज और सफल हों, उसकी सहज विधि क्या है? कोई भी कर्म करते हो तो पहले 'त्रिकालदर्शी' बन फिर कोई कर्म करो। क्योंकि त्रिकालदर्शी बन कर काम करने से, तीनों कालों का ज्ञान बुद्धि में रहने से कोई कर्म नीचे-ऊपर नहीं होगा। वैसे भी ज्ञान का अर्थ **ही है जो आगे-पीछे सोच-समझ कर कर्म करे, कर्म के पहले उसकी रिज़ल्ट को जाने।** ऐसे नहीं, जल्दी-जल्दी जो आया वह कर लिया। उसमें सफलता नहीं होती। **पहले परिणाम को सोचो, फिर कर्म करो तो सदा श्रेष्ठ परिणाम निकलेगा।** श्रेष्ठ परिणाम को ही सफलता कहा जाता है। ऐसे नहीं — बहुत बिज़ी था, जो काम सामने आया वह करना शुरू कर दिया। नहीं। जैसे बापदादा ने श्रीमत दी है कि भोजन करने के पहले भोग लगाओ, पीछे खाओ। भोग लगाने का कर्म अगर नहीं करते और जल्दी-जल्दी में खा लिया, तो परिणाम क्या होगा? याद भूलने से जो ब्रह्मा-भोजन का, अन्न का मन पर प्रभाव पड़ना चाहिए वह नहीं होगा। एक तो प्रभाव नहीं पड़ेगा और दूसरा बाप की श्रीमत न मानने का नुकसान होगा क्योंकि अवज्ञा हो गई ना! उसका भी उल्टा फल मिलना है। अगर

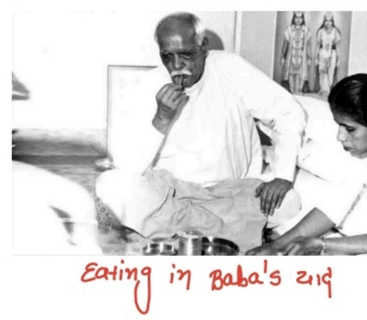

कर्म करने से पहले यह आदत पड़ जाए कि पहले तीनों काल सोचना है, त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर फिर कर्म करो, तो कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं होगा, साधारण नहीं होगा। लौकिक में भी सफलता प्राप्त करेंगे और अलौकिक में सफलता-ही-सफलता है। तो त्रिकालदर्शी की स्मृति के स्थिति रूपी तख्त पर बैठो, फिर निर्णय करो कि क्या करना है, क्या नहीं करना, कैसे करना है! फिर कोई भी कर्म फल नहीं देवे — यह हो नहीं सकता। बीज अगर शक्तिशाली होगा तो फल अवश्य मिलेगा। लेकिन जल्दी-जल्दी में कमज़ोर कर्म करते हो, तो फल भी थोड़ा-बहुत मिल जाता है, जितना मिलना चाहिए उतना नहीं मिलता, जितना चाहते हो उतना नहीं मिलता। तो हर कर्म की सफलता का आधार **है त्रिकालदर्शी स्थिति।** ऐसे नहीं — सिर्फ याद रखो कि मास्टर त्रिकालदर्शी हूँ और कर्म करने के समय भूल जाओ। इसे यूज़ करना। इस अभ्यास में कभी भी अलबेले नहीं बनो। यह अभ्यास करो। क्योंकि 21 जन्म के लिए जमा करना है। एक जन्म में 21 जन्म का जमा करना है, तो कितना अटेन्शन देना पड़ेगा। टेन्शन नहीं, लेकिन सदा अटेन्शन रखो। अलबेलेपन का अब परिवर्तन करो। दाता दे रहा है तो पूरा लो। देने वाला दे और लेने वाला थोड़ा लेकर खुश हो जाये तो रिज़ल्ट क्या होगी? फिर नहीं मिलेगा। इसलिए पूरा अटेन्शन दो।

Attention Please..!

Point to ponder deeply...

अभी नहीं तो कभी नहीं